

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 10, नरक का सिद्धांत

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल धर्म के दर्शन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 10 है, नरक का सिद्धांत।

ठीक है, तो हमने धार्मिक विश्वास की तर्कसंगतता के कई आयामों के बारे में बात की है। हमने आस्तिक तर्कों और उन पर कुछ आपत्तियों को देखा है, और हमने बुराई की समस्या को आस्तिक विश्वास के लिए सबसे महत्वपूर्ण आपत्ति के रूप में माना है।

अब, हम एक ऐसे सिद्धांत के बारे में बात करने जा रहे हैं, जिसे कई लोग आस्तिक धर्मों के साथ एक बड़ी समस्या मानते हैं, और वह है नरक का सिद्धांत। कुछ प्रश्न जिन पर हम विचार करेंगे, वे हैं कि क्या नरक का सिद्धांत नैतिक रूप से समस्याग्रस्त है, नरक के विभिन्न दृष्टिकोण क्या हैं जिन्हें विशेष रूप से ईसाई धर्मशास्त्रियों और बाइबिल के विद्वानों द्वारा पुष्टि की जाती है, और विभिन्न विचारों की समस्याएं और ताकत क्या हैं।

तो, हम डेविड लुईस द्वारा नरक की अवधारणा पर आपत्ति से शुरू करेंगे, जो 20वीं सदी के उत्तरार्ध के सबसे प्रमुख तत्वमीमांसकों में से एक हैं। और उनकी आलोचनाओं की प्रकृति को देखना दिलचस्प है। उनका दावा है कि, नरक के रूढ़िवादी ईसाई सिद्धांत को देखते हुए, भगवान लोगों को नरक में हमेशा के लिए और अत्यधिक तीव्रता से यातना देकर बुराई करने का दोषी है।

लुईस का दावा है कि, नरक के रूढ़िवादी ईसाई सिद्धांत को देखते हुए, भगवान लोगों को नरक में हमेशा के लिए यातना देकर बुराई करने का दोषी है, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, अत्यधिक तीव्रता के साथ, और यहां तक कि सबसे बुरे इंसान भी सीमित पाप करते हैं। इसलिए, शापित लोगों की सजा उनके अपराधों के अनुपात में असीम रूप से असंगत है, उनका दावा है। इसलिए, वे कहते हैं, भगवान जो करते हैं वह सबसे बुरे अत्याचारियों द्वारा किए गए कार्यों से असीम रूप से बदतर है।

लुईस कहते हैं कि यह समस्या बुराई की समस्या का एक उपेक्षित पहलू रही है, हालांकि यह मानक संस्करणों से कहीं ज़्यादा खराब है, जो सिर्फ उस बुराई पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसकी अनुमति ईश्वर देता है, न कि ईश्वर द्वारा की गई बुराई की समस्या पर। कम से कम, जैसा कि लुईस इसे देखते हैं, यह कुछ ऐसा है जो ईश्वर मनुष्यों के साथ कर रहा है, न कि कुछ ऐसा जो हम खुद पर लाते हैं। इसलिए, नरक के बारे में पारंपरिक दृष्टिकोण, निश्चित रूप से, यह है कि लोग वहाँ इसलिए जाते हैं क्योंकि उन्होंने एक ख़ास तरह का जीवन जिया है, एक दुष्ट जीवन, और यह उनकी दुष्टता के लिए अंतिम सजा है, या यह कि भले ही उनका जीवन काफी सामान्य रहा हो, फिर भी उसमें एक निश्चित मात्रा में पाप शामिल है, और इसलिए यदि उन्हें माफ़ नहीं किया जाता है, तो नरक अंततः उनके पापों की सजा है।

लेकिन लुईस कहते हैं कि इस विचार को ध्यान में रखते हुए भी कि मनुष्य अक्सर अनैतिक कार्य करते हैं, फिर भी ईश्वर के लिए लोगों को नरक में कष्ट देना अनुचित है, खासकर अगर यह हमेशा के लिए चलता रहे। इसलिए, वह समस्या के लिए कई संभावित प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करते हैं, जिसकी शुरुआत स्वतंत्रतावादी स्वतंत्र इच्छा की अपील से होती है, जो असंगतिवादी या स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता की अपील करके समस्या को कम करने का प्रयास करती है। ईश्वर लोगों को अंततः मोक्ष या नरक चुनने की अनुमति देता है।

तो, फिर से विचार यह है कि नरक अंततः लोगों द्वारा चुना जाने वाला एक विकल्प है, न कि भगवान पर दोष मढ़ना। वह बस हमें वही दे रहा है जो हमारे कर्म, हमारे स्वतंत्र कर्म, के योग्य हैं। इस पर उसका जवाब यह है कि भगवान के लिए यह अभी भी बहुत अन्यायपूर्ण है कि वह लोगों को ऐसी स्थिति में डालता है जिसमें उन्हें ऐसा निर्णय लेना पड़ता है जो उन्हें हमेशा के लिए बांध देता है।

वह इसकी तुलना ऐसे माता-पिता से करते हैं जो नर्सरी को नुकीली वस्तुओं और विस्फोटक उपकरणों से सुसज्जित करते हैं, जो काफी ज्वलंत और परेशान करने वाली छवि है। लेकिन भगवान लोगों को ऐसी स्थिति में डालने के लिए क्यों बनाएंगे जहां वे ऐसी स्थिति में आ सकते हैं जहां वे हमेशा के लिए पीड़ित हों? लुईस इसे गैरजिम्मेदाराना मानते हैं। इसके अलावा, वह कहते हैं कि यह संदिग्ध है कि असंगतिवादी या स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता सर्वोच्च मूल्य है, है ना? अक्सर यह मुद्दा उठाया जाता है कि भगवान ने मानव स्वतंत्रता को इतना महत्वपूर्ण माना क्योंकि वह लोगों के साथ एक रिश्ता चाहता था और यह लोगों के अंततः नरक में जाने के जोखिम के लायक होगा।

लुईस कहते हैं कि सिर्फ एक ऐसी दुनिया पाने के लिए जिसमें आपको उस तरह की आज़ादी और रिश्ते के लिए उस तरह की संभावना मिले, नहीं, यह इसके लायक नहीं है। उस तरह की आज़ादी को सर्वोच्च मूल्य के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि यह खतरों का प्रतिनिधित्व करेगी। वैसे भी, उनका कहना है कि ईश्वर असंगत स्वतंत्रता को बरकरार रख सकता है जबकि वह उससे कहीं ज़्यादा लालच और आग्रह करता है।

दूसरा दृष्टिकोण नरक की विभिन्न व्याख्याओं को अपील करना है। विशेष रूप से, उदाहरण के लिए, यह विचार कि अभिशाप वास्तव में ईश्वर के प्रति अवज्ञाकारी होने की स्थिति में है, न कि अत्यंत दर्दनाक या भयंकर यातना या जलन के विपरीत, जैसा कि बाइबिल की कई छवियों में बताया गया है। हो सकता है कि यह ईश्वर के साथ तालमेल न बिठाने या अवज्ञाकारी होने या उसे अस्वीकार करने की स्थिति हो।

यह एक अप्रिय स्थिति है, लेकिन पूर्ण पीड़ा नहीं है। लुईस का जवाब है कि यह नरक की पीड़ाओं की उचित समझ नहीं है जैसा कि शास्त्रों में दर्शाया गया है। भले ही यह नरक की प्रकृति हो, अवज्ञा की स्थिति, यह तथ्य कि उस स्थिति, उस स्थिति को कभी भी ठीक नहीं किया जा सकता है, अपने आप में एक समस्या है।

एक और दृष्टिकोण सीमित दंड का दृष्टिकोण है। कुछ लोग मानते हैं कि नरक की सज़ाएँ या तो सीमित हैं या फिर अस्तित्वहीन हैं। उदाहरण के लिए, यह विचार कि भगवान अंततः नरक में सभी से पश्चाताप करवाते हैं, पुनर्स्थापनावादी दृष्टिकोण है।

यह सार्वभौमिकता का एक रूप है, जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे। लुईस ने जवाब दिया कि स्वतंत्रता के संगतवादी दृष्टिकोण को देखते हुए, जो यह दृष्टिकोण है कि मानव स्वतंत्रता एक प्रकार के नियतिवाद के अनुरूप है, भगवान इस बात की गारंटी देकर सीमित दंड से भी बच सकते थे कि लोग उन्हें अस्वीकार नहीं करेंगे। दूसरे, भले ही यह मान लिया जाए कि नरक में हर कोई अंततः वापस आ जाता है, इस दृष्टिकोण से, भगवान अभी भी अनंत काल तक पीड़ा जारी रखने के लिए तैयार है, और यह अपने आप में एक अत्यधिक बुराई है।

और फिर आपके पास मानक सार्वभौमिक दृष्टिकोण है, जो कहता है कि भगवान किसी को नरक में दंडित नहीं करता है, न ही ऐसा करना उसका स्वभाव है, है न? हर कोई बच जाता है; आपके पास किसी भी तरह के भयानक जीवन की संभावना नहीं है। लुईस का जवाब है कि भयानक की प्रकृति। इसलिए, नरक के सिद्धांत की पुष्टि ईसाइयों द्वारा की जानी चाहिए।

यह तथ्य कि बाइबल में नरक का बहुत उल्लेख है, निर्विवाद है, और यही वह बिंदु है जिसे वह यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके अलावा, वह कहते हैं कि यदि सभी को बचाया जाएगा, चाहे वे विश्वासी हों या नहीं, तो ईसाई छुटकारे का क्या उपयोग है? और क्या यह अन्यायपूर्ण नहीं है कि विश्वासी और दुष्ट दोनों को समान रूप से एक ही शाश्वत स्वर्गीय नियति प्राप्त होगी? जो कि उनकी ओर से एक दिलचस्प रियायत है। यहाँ उन्होंने इस दृष्टिकोण की शिकायत की है और इसकी आलोचना की है क्योंकि यह एक बहुत ही अंधकारमय और स्पष्ट रूप से अन्यायपूर्ण विचार है कि लोग अपने पापों के लिए नरक में पीड़ित होंगे।

लेकिन अब वह इस बात पर जोर दे रहा है कि जो लोग नेक हैं, साथ ही जो लोग दुष्ट हैं, उनका अंत एक ही तरह से होगा। यह किसी तरह से अन्यायपूर्ण है और मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में उचित दृष्टिकोण नहीं है। तो, ऐसा लगता है कि वह दोनों तरह से चाहता है।

वैसे भी, ये डेविड लुईस की कुछ आलोचनाएँ हैं, और मुझे लगता है कि यह हममें से उन लोगों के लिए विचार करने के लिए अच्छा विषय है जो ईसाई या अन्य आस्तिक हैं जो नरक की वास्तविकता की पुष्टि करते हैं। यहाँ मानक दृष्टिकोण दिए गए हैं, इससे पहले कि हम उनमें से प्रत्येक के बारे में विशेष रूप से बात करें और फिर प्रत्येक दृष्टिकोण के पक्ष और विपक्ष में तर्क दें। एक पारंपरिक दृष्टिकोण है, जिसके बारे में लुईस सबसे अधिक विरोध करते हैं।

यह विचार है कि शापित लोग अनंत काल तक सचेतन पीड़ा सहते हैं। मैं इस वाक्यांश का बार-बार प्रयोग करूँगा - अनंत काल तक सचेतन पीड़ा।

सेंट ऑगस्टीन से लेकर आज तक के अधिकांश ईसाई धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों ने इस बात की पुष्टि की है, साथ ही एलेनोर स्टंप जैसे लोगों ने भी इस पर बात की है, और हम इस पर बात करेंगे। और फिर एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे सशर्त अमरवाद के रूप में जाना जाता है। कभी-

कभी, इसे विनाशवाद कहा जाता है, जो यह दृष्टिकोण है कि जो लोग नरक में जाते हैं, वे एक निश्चित अवधि के लिए वहाँ कष्ट सहते हैं।

शायद यह हज़ारों साल का हो। शायद यह सिर्फ़ कुछ महीने या हफ़्ते का हो। शायद यह इस बात पर निर्भर करता है कि इस जीवन में व्यक्ति की दुष्टता कितनी है।

लेकिन किसी समय, नरक में पीड़ा समाप्त हो जाती है, और शापित लोग नष्ट हो जाते हैं, मिट जाते हैं। वे उस शून्यता में वापस लौट जाते हैं जहाँ से वे आए थे। यही सशर्त अमरता है।

एडवर्ड फज इस दृष्टिकोण के एक प्रसिद्ध समर्थक थे। उन्होंने द फायर दैट कंज्यूम्स नामक एक पुस्तक लिखी, और मैं भी इसी दृष्टिकोण को मानता हूँ। और मेरी पुस्तक जो मैंने 2019 में प्रकाशित की, जिसका नाम है हेल एंड डिवाइन गुडनेस, इस बिंदु तक, सशर्त अमरतावाद का एकमात्र विशुद्ध या अधिकतर दार्शनिक बचाव है।

मैं शुरुआती अध्याय में बाइबिल के तर्कों, पक्ष और विपक्ष के बारे में बात करता हूँ, लेकिन पुस्तक का बाकी हिस्सा शर्तवादी दृष्टिकोण का दार्शनिक बचाव है। और फिर सार्वभौमिकता है, जो कहती है कि अंत में, हर कोई बच जाएगा। थॉमस टैलबोट, एरिक राइटन और अन्य लोग इस दृष्टिकोण का बचाव करते हैं, साथ ही रॉबिन पेरी जैसे धर्मशास्त्री भी, जिन्होंने ग्रेगरी मैकडोनाल्ड के नाम से द इवेंजेलिकल यूनिवर्सलिस्ट नामक पुस्तक लिखी है।

उन्होंने ग्रेगरी ऑफ निस्सा और जॉर्ज मैकडोनाल्ड से ये दो नाम लिए, उन्हें छद्म नामों के रूप में इस्तेमाल किया और अंततः एक सार्वभौमिकवादी के रूप में सामने आए। लेकिन यह संभवतः सार्वभौमिकता का सबसे अच्छा धार्मिक बचाव है जो मैंने देखा है। ये तीन दृष्टिकोण हैं, और उनमें से प्रत्येक के शुरुआती चर्च में महत्वपूर्ण समर्थक थे।

इस मुद्दे पर आरंभिक चर्च के पिताओं में मतभेद था। आपके पास परंपरावादी दृष्टिकोण, शाश्वत सचेतन पीड़ा का दृष्टिकोण, साथ ही पैट्रिस्टिक्स के बीच प्रतिनिधित्व करने वाले शर्तवादी और सार्वभौमिकवादी दृष्टिकोण थे। लेकिन फिर, सेंट ऑगस्टीन और उनके द्वारा शाश्वत सचेतन पीड़ा की पुष्टि के साथ, यह ईसाई चर्च में एक तरह की डिफ़ॉल्ट स्थिति में कठोर हो गया और तब से ऐसा ही है, भले ही सदियों से शर्तवादी और सार्वभौमिकवादी के रूप में बहुत सारे बाहरी लोग रहे हों।

शर्तवादी लोग चलाते हैं, जिनमें क्रिस्टोफर डेट भी शामिल हैं; मुझे लगता है कि ग्लेन पीपल्स इसमें मदद करते हैं। और हेल ट्रांगल नाम का एक बहुत ही उपयोगी और जानकारीपूर्ण इन्फोग्राफ़िक है जिसे आप देख सकते हैं जो तीनों दृष्टिकोणों के बीच अंतर और कुछ कनेक्शन बिंदुओं को दर्शाता है। यह देखना बहुत मददगार है कि इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण को एक ही ग्राफ़िक में कैसे समझाया और पहचाना गया है।

तो, आइए सबसे पहले अनन्त सचेत पीड़ा के पारंपरिक दृष्टिकोण के बारे में बात करते हैं। कोई इस दृष्टिकोण का बचाव कैसे कर सकता है? फिर से, एलेनोर स्टंप दार्शनिकों के बीच इस दृष्टिकोण के सबसे प्रमुख रक्षकों में से एक हैं। उन्होंने पूछा कि हम नरक की यातनाओं को ईश्वर

के प्रेम के साथ कैसे जोड़ सकते हैं। वह इस मामले पर एक थॉमिस्टिक दृष्टिकोण रखती है और थॉमस एक्विनास के प्रेम के विवरण और यह कैसे ईश्वर की भलाई से जुड़ा है, के बारे में बात करती है।

स्टंप के अनुसार, एक्विनास का मानना है कि किसी से प्यार करना उसकी भलाई की इच्छा करना है, यानी उसकी प्रकृति की पूर्ति की इच्छा करना। जब आप किसी व्यक्ति या वस्तु की भलाई चाहते हैं, तो आप उसकी प्रकृति की पूर्ति की इच्छा कर रहे होते हैं। मनुष्यों के लिए, यह उनकी तर्क करने की क्षमता को पूरा करना है।

इसलिए, किसी इंसान से प्यार करना उसके नैतिक कार्यों को बढ़ावा देना और एक सद्गुणी चरित्र को प्राप्त करना है। लेकिन अब अनंत नरक का सिद्धांत इसके विपरीत प्रतीत होता है, है न? तो, एक्विनास इसे कैसे समझते हैं? स्टंप कहते हैं कि हमें सबसे पहले यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि एक्विनास के लिए स्वर्ग और नरक क्या हैं। स्वर्ग, जैसा कि एक्विनास कहते हैं, या यह स्टंप कह सकते हैं, ईश्वर के साथ एक आध्यात्मिक मिलन की स्थिति है, केवल वही करने की स्वतंत्र इच्छा की स्थिति जो ईश्वर की इच्छा के अनुरूप है।

और इसका मतलब है कि नरक इस मिलन का स्वतंत्र अस्वीकृति है, जो तर्कहीनता का अंतिम कार्य भी है। हम इस संबंध में ईश्वर की छवि में बने तर्कसंगत प्राणी हैं। हम ईश्वर के साथ मिलन के लिए बने हैं।

यही सबसे तर्कसंगत बात है। इसलिए, ईश्वर के साथ उस मिलन को अस्वीकार करना तर्कहीनता की पराकाष्ठा है। वह कहती हैं कि, उद्धरण, अपने स्वभाव के विपरीत कार्य करने के लिए बार-बार तैयार होने के परिणामस्वरूप, शापित लोग, जीवित रहते हुए, तर्कहीन कार्य करने के लिए मुख्य स्वभाव प्राप्त कर लेते हैं।

इसका मतलब यह है कि जैसे-जैसे वे समय के साथ अनैतिक विकल्पों के माध्यम से बुराइयों और चरित्र की एकता को प्राप्त करते हैं, यह एक प्रकार की दूसरी प्रकृति का निर्माण करता है जो ईश्वर के साथ एकता के साथ असंगत है। इसलिए, परिणामस्वरूप, ईश्वर शापित लोगों के साथ उनके दूसरे स्वभाव के अनुसार व्यवहार करता है, जो उनके द्वारा स्वयं के लिए चुने गए अर्जित स्वभाव के अनुसार है। इसलिए विचार यह है कि जैसे-जैसे आप इस दुनिया में अपना जीवन जीते हैं, आप हर दिन अपने द्वारा चुने गए विकल्पों को चुन रहे हैं, नर्क या स्वर्ग।

शायद, कुछ हद तक, एक मिश्रण, है न? यदि आप मुख्य रूप से पुण्य जीवन जीते हैं, लेकिन समय-समय पर गलती करते हैं, जैसा कि हम सभी करते हैं, उन क्षणों में जब आप पाप करते हैं, तो यह एक नारकीय विकल्प है। और दूसरी ओर, जो लोग मुख्य रूप से दुष्ट जीवन जी रहे हैं, वे कभी-कभी पुण्य कार्य करते हैं; यह स्वर्गीय दिशा में एक इशारा है। लेकिन अंत में, विचार यह है कि आप मुख्य रूप से एक या दूसरे रास्ते पर जा रहे हैं, स्वर्ग की ओर या नरक की ओर।

स्वर्गीय या नारकीय तरीके से जीए गए जीवन का परिणाम एक प्रकार का स्वभाव है जो परलोक में इन दो नियतियों में से एक के लिए उपयुक्त है। तो, भगवान लोगों को हमेशा के लिए नरक में

भेजने के बजाय उन्हें नष्ट क्यों नहीं कर सकते? यह एक तरह का शर्तवादी या विनाशवादी प्रश्न है। स्टंप ने नोट किया कि एकिनास कहते हैं कि यह कोई विकल्प नहीं है क्योंकि ऐसा करना अस्तित्व को मिटाना होगा, जो हमेशा एक बुराई है।

उद्धरण, इस तरह के एक प्रमुख अच्छे के अभाव में, शापित का विनाश नैतिक रूप से उचित नहीं है और इस प्रकार एक अच्छे भगवान के लिए एक विकल्प नहीं है। इसके अलावा, शापित को अलग करके, भगवान उन्हें आगे की बुराई करने और उनके अस्तित्व के आगे विघटन से रोकता है। तो, इस अर्थ में, यह विडंबनापूर्ण निष्कर्ष है जिस पर स्टंप यहाँ आ रहा है।

इस अर्थ में, ईश्वर शापित लोगों की भलाई को बढ़ावा देता है और उन्हें अलग-थलग करके और उनके पूर्ण विनाश को रोककर उनसे प्यार करता है, उन्हें अस्तित्व में बनाए रखता है लेकिन फिर उन्हें उनके नारकीय वातावरण में और अधिक बुराई करने से रोकता है। तो, यह ईश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति भी है, जो फिर से विडंबनापूर्ण है। तो, यह हमारे सामने कुछ सवाल छोड़ता है।

एक यह है कि अनंत बुराई, निरंतर पीड़ा और बुराई से बचना कैसे एक सर्वोपरि अच्छाई नहीं हो सकती? विनाश के माध्यम से या अंततः शापित की दूसरी प्रकृति, शापित की दूसरी प्रकृति और उनके द्वारा अर्जित नरक को बदलकर इसे रोकना अच्छा क्यों नहीं होगा? यह सार्वभौमिक प्रश्न होगा। और अगर भगवान सभी से प्यार करते हैं, तो वह सभी की प्रकृति की पूर्ति चाहते हैं। तो, सर्वशक्तिमान होने के नाते, वह इसे फिर से क्यों नहीं प्राप्त कर सकते? वह नरक में सभी को क्यों नहीं बदल सकते ताकि उन सभी को बहाल किया जा सके और अंततः सभी को बचाया जा सके? तो, आइए अब सशर्त अमरतावाद या विनाशवाद की ओर मुड़ें।

यह विचार है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से अमर नहीं है, बल्कि उसे केवल हमारे उद्धार के हिस्से के रूप में भगवान द्वारा अमरता प्रदान की गई है। यह विचार है कि अनन्त जीवन भगवान की ओर से एक उपहार है, और यह आपको केवल मानव होने के कारण स्वतः ही नहीं मिलता है। लेकिन, यदि आप बचाए गए हैं, तो आपको अनन्त जीवन प्रदान किया जाता है।

अन्यथा, आपका जीवन विनाश के रूप में समाप्त हो जाएगा। मेरी पुस्तक, हेल एंड डिवाइन गुडनेस एक दार्शनिक, धार्मिक जांच है, मुख्य रूप से दार्शनिक। यह सशर्त अमरतावादी दृष्टिकोण का एक दार्शनिक बचाव है।

यहाँ मेरे कुछ तर्क दिए गए हैं। सशर्त अमरवाद क्या है ? फिर से, यह दृष्टिकोण है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से अमर नहीं है, बल्कि हमारे उद्धार के हिस्से के रूप में भगवान द्वारा अमरता या अनन्त जीवन प्रदान किया जाता है। अमरता ईश्वरीय अनुग्रह पर सशर्त है।

जो लोग मसीह में बचाए गए हैं वे हमेशा मसीह के साथ रहते हैं, जबकि जो लोग शापित हैं वे एक निश्चित अवधि के लिए नरक में पीड़ित होते हैं और अंततः नष्ट हो जाते हैं। तो, यहाँ सशर्त अमरता के लिए कुछ तर्क दिए गए हैं। कुछ बाइबिल और दार्शनिक विचार इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं।

एक है विनाश के बारे में बाइबल में बहुत सारी बातें कही गई हैं। बाइबल में कई ऐसे अंश हैं जो शापित लोगों के नाश या नाश होने का जिक्र करते हैं। लेकिन, अगर वे हमेशा के लिए जीवित रहते हैं, तो वे वास्तव में नष्ट नहीं होते।

इसके अलावा, बाइबल में आग की कल्पना दुष्टों के विनाश का सुझाव देती है क्योंकि आग जब जलती है तो भस्म कर देती है। दूसरे, शास्त्रों में दंड और अनंत जीवन की ये विरोधी अवधारणाएँ हैं। दुष्टों के दंड के विपरीत ईसाइयों को अनंत जीवन का वादा किया गया है।

लेकिन, अगर शापित लोग नरक में अनंत काल तक रहते हैं, तो उनका भाग्य भी अनंत जीवन है। यह एक दर्दनाक अनंत जीवन है, लेकिन यह अभी भी एक अनंत जीवन है। तीसरा, सभी चीजों का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप एक बहुत ही प्रमुख बाइबिल विषय है।

बाइबल कहती है कि कुलुस्सियों 1 में परमेश्वर सभी चीजों को अपने साथ मिला लेगा। यदि शापित लोग हमेशा के लिए नरक में रहते हैं, तो वे परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप नहीं कर सकते। यह भी सार्वभौमिकता के लिए एक तर्क है। लेकिन, शर्तवादी कह सकते हैं कि, कम से कम शर्तवादी दृष्टिकोण पर, जब लोगों का विनाश होता है, तो वहाँ कोई भी ऐसा नहीं बचता जो परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप न कर सके।

जो कोई भी जीवित रहता है, वह परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लेता है। चौथा, मैथ्यू 10.28 का अंश, जहाँ यीशु कहते हैं कि परमेश्वर शरीर और आत्मा दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। वह कहते हैं, मनुष्यों से मत डरो जो केवल शरीर को नष्ट कर सकते हैं।

ईश्वर से डरो, जो नरक में शरीर और आत्मा दोनों को नष्ट कर सकता है। इससे पता चलता है कि नरक वास्तव में एक ऐसी जगह है जहाँ आत्माओं को नष्ट किया जाता है। फिर आपके पास दूसरी मृत्यु की अवधारणा है जिसका संदर्भ प्रकाशितवाक्य 20 और 21 में दिया गया है।

धर्मशास्त्री और बाइबिल के विद्वान इस बात पर बहस करते हैं कि शर्तवादी दृष्टिकोण पर इसका क्या अर्थ है। दूसरी मृत्यु नरक में आत्मा की मृत्यु को संदर्भित करती है - अंत में, न्याय से तर्क।

यदि सभी शापित लोग अनंत काल तक नरक में पीड़ित रहते हैं, तो यह सीमित पापों के लिए अनंत दंड का गठन करता है, जो कि बहुत अन्यायपूर्ण है। उन पापों के लिए अंतहीन पीड़ा जो अलग-अलग और सीमित हैं। न्याय का यह तर्क वास्तव में एक विशुद्ध दार्शनिक तर्क है, लेकिन यह सशर्त दृष्टिकोण के बचाव में सबसे प्रभावशाली तर्कों में से एक है।

यहाँ शर्तवादी दृष्टिकोण के कुछ प्रतिवाद दिए गए हैं। विशेष रूप से परंपरावादियों द्वारा की गई आपत्तियाँ। एक तथाकथित स्थिति सिद्धांत का हवाला देता है।

विचार यह है कि हमारे पापों से आहत व्यक्ति, अर्थात् ईश्वर की नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति, परंपरावादी के अनुसार, इस मामले में उचित दंड निर्धारित करती है, जो अनंत या कभी न खत्म होने वाली पीड़ा है। यदि ईश्वर अनंत और पवित्र है, तो ईश्वर के विरुद्ध पाप अनंत दंड के हकदार

हैं। इसके जवाब में, शर्तवादियों ने अक्सर देखा है कि अनंत सचेत पीड़ा वास्तव में अनंत दंड प्राप्त नहीं करती है, क्योंकि शापित के पापों को कभी भी पूरी तरह से दंडित नहीं किया जाता है।

अगर हम इस दुनिया में अनंत अपराध के दोषी हैं और भगवान के खिलाफ पाप कर रहे हैं, तो हम नरक में अपने करियर की अवधि में किसी भी बिंदु पर अनंत पीड़ा नहीं झेल सकते। उन्होंने केवल सीमित पीड़ा झेली है और अनंत पीड़ा कभी नहीं पहुँची है। इसलिए, कोई भी व्यक्ति वास्तव में अनंत दंड नहीं झेल सकता है यदि उस दंड को मुख्य रूप से पीड़ा के रूप में समझा जाता है।

तो ऐसा लगता है कि इस दृष्टिकोण से, हमेशा एक उत्कृष्ट नैतिक बुराई बनी रहती है, कुछ पाप जो दंडित किए जाने के लिए बचे रहते हैं, जिन्हें पर्याप्त रूप से दंडित नहीं किया गया है। और अगर यह एक अनंत ईश्वर, एक पूर्ण नैतिक और पवित्र ईश्वर के खिलाफ पाप है, जो हमें असीम रूप से दोषी बनाता है और इसलिए अनंत बुराई का दोषी बनाता है, तो जो कुछ भी अनंत काल तक बिना दंड के रह जाता है वह अनंत मात्रा में बुराई है। इसलिए, इस दृष्टिकोण पर बुराई पर ईश्वर की अंतिम विजय के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण पर एक समस्या है।

एक अन्य दृष्टिकोण, जो शापित लोगों की अंतहीन सजा को उचित ठहराने की कोशिश करता है, नरक में पाप जारी रखने के पूरे विचार को अपील करता है। निरंतर पाप सिद्धांत के अनुसार, शापित लोग नरक में हमेशा पाप करते हैं, इस प्रकार अधिक से अधिक दंड के हकदार होते हैं। उन्हें एक विशेष समय पर कुछ पिछले पापों के लिए दंडित किया जा रहा है; इस दौरान, वे पाप करना जारी रखते हैं और फिर बाद में उन पापों के लिए दंडित होने की आवश्यकता होती है, और यह अनिश्चित काल तक, अनंत काल तक चलता रहता है।

स्वतंत्रता के एक उदारवादी दृष्टिकोण को देखते हुए, ऐसा लगता है कि कम से कम कुछ शापित लोगों के लिए पाप करना बंद करना अभी भी संभव होगा ताकि उनकी सजा पूरी हो सके। इस मामले में, फिर, भगवान को उन्हें नरक से बाहर निकालना चाहिए, और कुछ को बहाल करना चाहिए।

दूसरे, यह दृष्टिकोण, निरंतर पाप सिद्धांत, भी शाश्वत नैतिक बुराई को दर्शाता है। जैसे-जैसे लोग नरक में हमेशा के लिए पाप करते हैं, वैसे-वैसे परमेश्वर के लिए और भी पाप होते हैं जिनसे निपटना होता है। इस दृष्टिकोण से वह कभी भी बुराई पर पूरी तरह से विजय नहीं पा सकता।

हमेशा ही दंडनीय नैतिक बुराई होती है। इसलिए, यहाँ दोनों अवधारणाएँ, स्थिति सिद्धांत के साथ-साथ निरंतर पाप सिद्धांत पर आधारित हैं, जो चिरस्थायी नैतिक बुराई की समस्या का सामना करती हैं। ठीक है, तो अब आइए तीसरे दृष्टिकोण, सार्वभौमिक दृष्टिकोण की ओर मुड़ें, और थॉमस टैलबोट के कुछ विचारों के बारे में बात करें, जिन्होंने *द इनसेपेबल लव ऑफ़ गॉड* नामक पुस्तक लिखी है।

टैलबोट के अनुसार, जब अन्य ईसाई सिद्धांतों के साथ जोड़ा जाता है, तो शाश्वत दंड का सिद्धांत विरोधाभास पैदा करता है। वह ईश्वरवाद के कई अलग-अलग रूपों को अलग करता है, और वह

बाइबिल के ईश्वरवाद का बचाव करता है, जो एक तरह के सार्वभौमिकता की पुष्टि करता है। इसलिए, वह रूढ़िवादी ईश्वरवाद के बारे में बात करके शुरू करता है, यह विचार कि ईश्वर हर सृजित व्यक्ति से प्यार करता है।

जैसा कि अक्सर कहा जाता है, ईश्वर आपसे प्यार करता है और आपके जीवन के लिए एक अद्भुत योजना रखता है, जैसा कि एक पुराने सुसमाचारी ग्रंथ में कहा गया है, यह धारणा है कि आप जो भी हैं, ईश्वर आपसे प्यार करता है। अगर ऐसा है, तो ईश्वर को हर व्यक्ति से प्यार करना चाहिए। यह ईसाई मंडलियों में एक मानक दृष्टिकोण है।

दूसरा, यह रूढ़िवादी आस्तिक दृष्टिकोण यह मानता है कि ईश्वर इस तथ्य के बावजूद कुछ लोगों को अपरिवर्तनीय रूप से अस्वीकार कर देगा और उन्हें हमेशा के लिए पीड़ा देगा। इसलिए, कुछ लोग जिन्हें ईश्वर बहुत प्यार करता है, उन्हें हमेशा के लिए पीड़ा दी जाएगी। टैलबोट के अनुसार, यह समस्याग्रस्त है।

वह कहते हैं कि किसी से प्यार करना उनके दीर्घकालिक सर्वोत्तम हित के लिए समर्पित होना है। लेकिन अगर भगवान कुछ लोगों को खुद से मिलाने से इनकार करते हैं, तो वह उनके दीर्घकालिक सर्वोत्तम हित में काम नहीं कर रहे हैं। आप किसी के सर्वोत्तम हित में कैसे काम कर सकते हैं यदि आप उन्हें अनंत काल तक यातना दे रहे हैं या उन्हें अंतहीन पीड़ा सहने दे रहे हैं जबकि आप इसे समाप्त कर सकते हैं? इसलिए, नरक में अंतहीन पीड़ा की अनुमति देना किसी से प्यार करना नहीं बल्कि उससे नफरत करना है।

और भगवान किसी से प्यार करना बंद नहीं कर सकते क्योंकि अगापे प्रेम अपरिवर्तनीय है। इसके बाद, वह जिसे कठोर हृदय वाला आस्तिकवाद कहते हैं, वह इस विचार को अस्वीकार करता है कि भगवान सभी से प्यार करते हैं और पुष्टि करते हैं कि भगवान कुछ सृजित लोगों से प्यार करते हैं लेकिन सभी सृजित लोगों से नहीं। भगवान कुछ लोगों को अपरिवर्तनीय रूप से अस्वीकार कर देंगे और उन्हें अनन्त पीड़ा के अधीन कर देंगे, विशेष रूप से उन लोगों को जिनसे वह नफरत करता है।

इस दृष्टिकोण के साथ एक समस्या यह है कि यदि प्रेमपूर्ण दयालुता ईश्वर की एक आवश्यक संपत्ति है, तो यह धारणा कि ईश्वर सभी सृजित व्यक्तियों से प्रेम नहीं करता है, अनिवार्य रूप से गलत है। ईश्वर के लिए प्रेम रहित तरीके से कार्य करना असंभव है, और इसीलिए, टैलबोट के अनुसार, उसे अंततः सभी को बचाना चाहिए। अब यदि प्रेमपूर्ण दयालुता ईश्वर की एक आकस्मिक संपत्ति है, तो कोई यह कहना चाहता है कि यह वास्तव में ईश्वर के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि यह ईश्वर की एक आकस्मिक या गैर-आवश्यक संपत्ति है, तो यहाँ कुछ अन्य समस्याएँ हैं।

एक यह है कि एक व्यक्ति के लिए ईश्वर के प्रेम के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी व्यक्तियों से प्रेम करे क्योंकि वह किसी व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता जब तक कि वह उन सभी से प्रेम न करे जिनसे वह व्यक्ति प्रेम करता है। यदि ईश्वर ने किसी व्यक्ति के प्रति मेरे प्रेम को घृणा में बदल

दिया, तो ईश्वर मेरे प्रति प्रेमहीन व्यवहार करेगा। इसलिए, इस दृष्टिकोण के भीतर आपके पास कई तनाव हैं, वह कहेगा कि विरोधाभास हैं।

इसके अलावा, परमेश्वर ने आज्ञा दी है कि हम दूसरों से प्रेम करें, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं से भी। यदि परमेश्वर शापित लोगों के प्रति प्रेमहीन व्यवहार करता है, तो यह इस आज्ञा का खंडन करता है। वह हमसे उन लोगों से प्रेम करने के लिए कह रहा है जिनसे वह घृणा करता है।

दूसरा दृष्टिकोण वह है जिसे वह मध्यम रूढ़िवादी आस्तिकता कहते हैं। मध्यम रूढ़िवादी दृष्टिकोण के अनुसार, जैसा कि टैलबोट कहते हैं, ईश्वर हर सृजित व्यक्ति से प्रेम करता है, लेकिन कुछ लोग, ईश्वर द्वारा उन्हें बचाने के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, अंततः ईश्वर को अस्वीकार कर देंगे और खुद को हमेशा के लिए ईश्वर से अलग कर लेंगे। इसलिए, उसने शापित लोगों को बचाने के लिए वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था, लेकिन वह कुछ लोगों को बचाने में सक्षम नहीं था।

वे परमेश्वर के प्रयासों के बावजूद उसे अस्वीकार करते हैं। लेकिन टैलबोट यह सवाल पूछता है। नरक में स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता के साथ कोई भी व्यक्ति परमेश्वर को अस्वीकार क्यों करना जारी रखेगा? और हर मामले में अनंत काल तक इसकी गारंटी कैसे दी जा सकती है? शायद हम यह मान लें कि कुछ लोग, सबसे दुष्ट लोग, अपने अंदर पैदा की गई इस थॉमिस्ट दूसरी प्रकृति के कारण इतने कठोर हो जाते हैं कि उनके पास पश्चाताप करने का विचार करने का भी मौका नहीं होता।

लेकिन क्या यह नरक में सभी पर लागू होगा? क्योंकि वहाँ स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता है, अगर कोई उस पर विश्वास करता है, तो क्या इससे नरक में कम से कम कुछ लोगों के यह कहने की संभावना नहीं खुल जाएगी कि, मुझे खेद है, कृपया मुझे माफ़ करें, और अंततः पश्चाताप करें? साथ ही, शापित लोगों की पीड़ा की वास्तविकता स्वर्ग में रहने वालों की खुशी को कमज़ोर कर देगी। यह एक अलग तरह की समस्या है। दरअसल, मैं नरक पर अपनी पुस्तक के अंतिम अध्याय का बेहतर हिस्सा स्वर्गीय दुःख की इस समस्या को समर्पित करता हूँ।

यदि आपका कोई प्रिय व्यक्ति नरक में है, तो आप स्वर्ग में वास्तविक शांति और बेदाग खुशी कैसे प्राप्त कर पाएंगे, यह जानते हुए कि आपका भाई या बहन, माता, पिता, बेटा या बेटा, या अच्छा दोस्त नरक में है? क्या यह किसी की खुशी को कम नहीं करेगा? पीटर गीच, अन्य लोगों के साथ, इस समस्या को संबोधित किया है। उनका कहना है कि ईश्वर हमें शापित लोगों के नैतिक भ्रष्टाचार के कारण इस तरह के अनंत दंड के न्याय को देखने में सक्षम करेगा। और इसलिए, हम इस न्याय की सराहना करेंगे, भले ही यह हमारे प्रियजनों की बात हो जो नरक में हैं, गीच के अनुसार।

विलियम लेन क्रेग और अन्य लोगों सहित अन्य लोगों ने भी इसी तरह का तर्क दिया है। इस पर टैलबोट का जवाब है कि सज़ा के न्याय को देखना उस व्यक्ति के इतने भ्रष्ट बने रहने के दुख को नकार नहीं सकता। सिर्फ़ इसलिए कि आप जानते हैं कि, मान लीजिए, आपकी बेटा या आपका

बेटा अच्छे कारण से जेल में है, अगर वे उदाहरण के लिए ड्रग्स का कारोबार कर रहे हैं, तो आप इसके न्याय पर खुश नहीं होते।

वास्तव में, आप अभी भी परेशान हैं, गहराई से परेशान हैं कि वे जेल में हैं, भले ही वे इसके लायक हों। इसलिए, सिर्फ इसलिए कि यहाँ न्याय है, निंदा का तथ्य नहीं बनता है। कोई भी कम दुखद नहीं है।

इसलिए, टैलबोट ने निष्कर्ष निकाला कि अनन्त दंड के साथ इन समस्याओं से बाहर निकलने का एकमात्र तरीका या तो शापित का विनाश या मानवता का सार्वभौमिक उद्धार है। वह पहचानता है कि विनाशवाद या शर्तवाद इन समस्याओं को हल करता है, या कम से कम उनमें से अधिकांश को। वह बाद के दृष्टिकोण, सार्वभौमिक दृष्टिकोण को चुनता है, यह देखते हुए कि प्रेरित पॉल का वादा कि ईश्वर मसीह में सभी चीजों को अपने साथ मिलाएगा, इस दिशा में इशारा करता है।

तो, उनका दृष्टिकोण बाइबिल आस्तिकवाद है। यह उनके लिए शब्द है। शर्तवादी और परंपरावादी उस शब्दावली के संबंध में मतभेद रखेंगे और जोर देंगे कि जब नरक के सिद्धांत की बात आती है तो उनके विचार बाइबिल आस्तिकवाद हैं।

लेकिन उनका मानना है कि ईश्वर हर सृजित व्यक्ति से प्रेम करता है और सभी व्यक्ति अंततः ईश्वर से मेल-मिलाप कर लेंगे और इसलिए, अनंत सुख का अनुभव करेंगे। सार्वभौमिकता वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार, अंततः सभी मनुष्य बच जाएँगे और मसीह के साथ अनंत जीवन का आनंद लेंगे। उनका कहना है कि यह इस दृष्टिकोण के साथ संगत है कि ईश्वर मृत्यु के बाद कई लोगों को दंडित करेगा।

यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा। इसलिए, वह नरक की वास्तविकता से इनकार नहीं कर रहा है। यह कुछ ऐसा है जिसकी पुष्टि ये तीनों दृष्टिकोण करते हैं।

सवाल यह है कि यह कितने समय तक चलता है? और क्या कोई अनंत काल तक नरक में रहता है? क्या नरक में लोग रहते हैं? और कितने लोग अंततः बच जाते हैं? क्या सभी या सिर्फ कुछ ही? सार्वभौमिकता को पतित स्वर्गदूतों या यहाँ तक कि शैतान पर भी लागू किया जा सकता है। कई सार्वभौमिकतावादी मानते हैं कि शैतान भी अंततः बच जाता है। आइए कुछ सार्वभौमिकतावादी अंशों पर ध्यान देकर निष्कर्ष निकालें जिन्हें अक्सर सार्वभौमिकतावादियों द्वारा उद्धृत किया जाता है।

जो लोग आश्चर्य करते हैं कि हम बाइबिल के विकल्प के रूप में सार्वभौमिकता के बारे में क्यों बात कर रहे हैं, उनके लिए कोई भी पैट्रिस्टिक इस दृष्टिकोण की पुष्टि कैसे कर सकता है? बहुत से परंपरावादी, विशेष रूप से, उत्सुक या संशयी हैं कि इस दृष्टिकोण के बचाव में किसी भी तरह का बाइबिल तर्क दिया जा सकता है। एक सार्वभौमिकतावादी किस तरह के अंशों की अपील करता है? खैर, यहाँ उनमें से कुछ हैं। 1 कुरिन्थियों 15.22 कहता है कि जैसे आदम में सभी मरते हैं, वैसे ही मसीह में भी सभी को जीवित किया जाएगा।

कुलुस्सियों 1:20 कहता है कि मसीह में, परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने और उसके द्वारा सब वस्तुओं का अपने साथ मेल करने की इच्छा हुई, चाहे वे पृथ्वी पर हों या स्वर्ग में, उसके क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करके। कीथ डेरोज़, जो येल में एक दार्शनिक और ईसाई दार्शनिक हैं, कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति हमेशा के लिए नरक में पीड़ित होता है या नष्ट हो जाता है, तो उसका परमेश्वर के साथ मेल नहीं होता है। यह डेरोज़ के साथ-साथ अन्य सार्वभौमिकवादियों के लिए भी जोर देने का एक बिंदु है।

रोमियों 5 में पौलुस कहता है कि जैसे एक व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों को दण्ड मिला, वैसे ही एक व्यक्ति के धार्मिकता के कार्य के कारण सभी लोगों को दोषमुक्ति और जीवन मिला। क्योंकि जैसे एक व्यक्ति की अवज्ञा से बहुत से लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता से बहुत से लोग धर्मी ठहरेंगे। दोनों आयतों में उन लोगों के बीच समानता पर ध्यान दें जो गिरते हैं और जो छुड़ाए जाते हैं।

यह सब कुछ है, और फिर यह बहुत कुछ है। रोमियों 11:32 कहता है कि परमेश्वर ने सभी को अवज्ञा में कैद कर लिया है ताकि वह सभी पर दया करे। एफएफ ब्रूस कहते हैं कि इस मामले में सभी का मतलब बिना किसी भेदभाव के सभी है, बिना किसी अपवाद के सभी नहीं।

यह एक महत्वपूर्ण अंतर है जिसे सार्वभौमिकता के आलोचक अक्सर बनाते हैं। डेरोज़ कहते हैं कि हमारे पास हर चीज़ को इस तरह से व्याख्या करने का कोई कारण नहीं है। फिर, परंपरावादी या अन्य गैर-सार्वभौमिकतावादी जो जवाब देंगे वह यह है कि नहीं, हमारे पास दुष्टों के अंतिम विनाश का सुझाव देने वाले बहुत से अन्य बाइबिल के सबूत हैं, जो सार्वभौमिकतावादियों द्वारा इस्तेमाल की जा रही व्याख्या से अलग सभी की व्याख्या को पुष्ट करेंगे।

रोमियों 10:9 कहता है कि यदि तुम अपने मुँह से स्वीकार करते हो कि यीशु प्रभु है और अपने हृदय में विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने उसे मरे हुएों में से जिलाया है, तो तुम उद्धार पाओगे। और फिर, फिलिप्पियों 2:11 और अन्यत्र, हमें बताया गया है कि हर जीभ यह स्वीकार करेगी कि यीशु प्रभु है और संभवतः यह स्वीकार करेगी कि परमेश्वर ने उसे मरे हुएों में से जिलाया है। यह एक ऐसा न्याय-सिद्धांत बनाता है जो सार्वभौमिकता का पक्षधर है, निष्कर्ष यह है कि परमेश्वर सभी को बचाएगा क्योंकि हर जीभ यह स्वीकार करेगी कि मसीह प्रभु है।

हालाँकि, यहाँ आम आपत्ति यह है कि जो लोग मरने के बाद मसीह को स्वीकार करते हैं, उनके लिए बहुत देर हो चुकी होगी। यह एक तरह की धारणा है जो परंपरावादी, साथ ही सशर्त लोग आमतौर पर बनाते हैं कि आपको इस जीवन में अवसर दिए जाते हैं, और फिर मृत्यु के बाद न्याय आता है। इब्रानियों 9:27 बहुत देर हो चुकी है।

ऐसा लगता है कि यह बात, कम से कम मानक व्याख्याओं के माध्यम से, लाजर और धनी व्यक्ति के दृष्टांत के बारे में भी कही गई है। अब बहुत देर हो चुकी है। आपने अपना निर्णय ले लिया है।

डेरोज़ पूछते हैं कि हमें ऐसा मानने का क्या कारण है। इस जीवन में मेरे अपने कबूलनामे को उससे ज़्यादा पुण्य क्यों माना जाना चाहिए? उनका कहना है कि यह एक खतरनाक विचारधारा है क्योंकि इसका मतलब है कि हम किसी तरह मोक्ष के पात्र हैं क्योंकि हम इस जीवन में कबूल

करते हैं। तो, इसके पक्ष और विपक्ष में तर्क हैं लेकिन ये कुछ प्रमुख प्रो-यूनिवर्सलिस्ट मार्ग हैं या जिन्हें अक्सर कुछ बाइबिल विद्वानों द्वारा सार्वभौमिकता के अर्थ में लिया जाता है। लेकिन यहाँ सार्वभौमिकता के लिए एक समस्या है, और वह है कई बाइबिल मार्ग जो दुष्टों के विनाश पर जोर देते हैं।

तुलनात्मक रूप से, ऐसे बहुत कम अंश हैं जो अंतिम सार्वभौमिक मुक्ति का सुझाव देते हैं। इसलिए, संतुलन पर, मुझे और अन्य शर्तवादियों और परंपरावादियों को ऐसा लगता है कि बाइबल अंततः यह संदेश दे रही है कि कुछ लोग अंत में बच नहीं पाते। हर कोई बच नहीं पाता।

हालांकि, जो अंश सार्वभौमिकता की ओर इशारा करते हैं, उन्हें गंभीरता से लिया जाना चाहिए और उन्हें आसानी से और लापरवाही से खारिज नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए, यह एक जटिल बहस है। सभी पक्षों में तर्क, पक्ष और विपक्ष हैं।

हम देख सकते हैं कि क्यों, आरंभिक चर्च, पैट्रिस्टिक युग में, ईसाई धर्मशास्त्रियों के बीच इतनी असहमति थी। और मुझे लगता है कि आज हमें इस पर विचार करना चाहिए। हम जो भी दृष्टिकोण अपनाते हैं, उस पर हठधर्मिता न करें, हालाँकि एक बात जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं, बाइबिल के अनुसार, वह यह है कि नरक वास्तविक है।

यह एक भयानक भाग्य है। तो, आइए हम उस भाग्य से बचने के लिए हर संभव प्रयास करें - और मसीह में परमेश्वर की ओर मुड़ें और जितना हो सके उतना एक वफादार जीवन जियें।

तो यह नरक के सिद्धांत पर हमारी चर्चा है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10 है, नरक का सिद्धांत।